

मैथिली शब्द: एक विवेचन

डा. विजयेन्द्र झा¹, डा. राधा कुमारी², डा. सुमन कुमार³

¹अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

² डा. राधा कुमारी, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पुर्णिया विश्वविद्यालय, पुर्णिया

³ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एम. एल. टी. कालेज, सहरसा, बिहार, भारत

सारांश : समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे मैथिली भाषा अत्यन्त प्राचीन अछि। एकर संबंध रामायण कालहिसँ अछि, मुदा प्रमाणिक रूपेँ वेदमे मैथिली शब्दसभ अभूत अछि। पश्चात् संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषामे सेहो मैथिली शब्दक साक्ष्य उपलब्ध अछि। अवहट्ठ तँ प्राकृत आ' प्राचीन मैथिलीक बीच सेतुक काज करैत अछि। प्रस्तुत आलेखमे ओहि समस्त मैथिली शब्दसभकेँ सूत्र रूपमे समेटबाक प्रयास कएल अछि जे विशुद्ध मैथिलीक थिक वा आन भाषासँ आयातित भ' मैथिलीक स्वनिमक मोताबिक अनुकूल भ' मैथिलीमे पचि गेल अछि। एकर अतिरिक्त तत्सम, तद्भव, विदेशज शब्द जे मैथिलीमे प्रचलित भ' चुकल अछि ओकरासभकेँ एहिठाम समेटबाक प्रयास कएल। विद्यापति कालहिसँ मैथिलीमे अरबी-फारसी-तुर्की शब्दसभ किछु-किछु प्रयुक्त होमय लागल छल। पश्चात् ई क्रम मध्यकालमे सेहो चलित रहल। आधुनिक काल अबैत-अबैत ई शब्दसभ तेना ने मैथिली भाषामे पचि गेल जे एकरा फरिछाएब अत्यन्त कठिन जे ई विदेशी शब्द थिक वा मूल मैथिलीक। जेना- टाट, फरक, दलान आदि। मैथिली भाषाक क्षेत्रविस्तार आ' शब्द-सामर्थ्यकेँ देखैत निर्धारित शब्द-संख्यक एहि आलेखमे मैथिलीक समस्त प्रकारक शब्दसभक विवेचन करब कथमपि संभव नहि। तँ मात्र प्रचलित शब्द आ' शब्द निर्माणक सामान्य प्रक्रियाक विश्लेषण करब एहिठाम संभव भ' सकल अछि।

बीज-शब्द: अपशब्द, तत्सम, तद्भव, देशज, मैथिली, बृहत्, वर्ण, व्यंजन, विभक्ति, विदेशज, विशुद्ध, व्युत्पत्ति, शब्द, स्वनभक्ति, ध्वनि-घटक,

प्राक्कथन:

कोनो भाषाक सभसँ छोट एकाइ वर्ण होइत अछि आ' वर्णक सार्थक समूहकेँ शब्द (Word) कहल जाइछ। एक वा एकसँ बेसी वर्णक मेलसँ स्वतंत्र, सार्थक ध्वनि शब्दक निर्माण करैत अछि। भारतीय संस्कृतिमे शब्दकेँ ब्रह्म कहल गेल अछि। शब्द कोनो भाषाक मूल वैभव थिक, जे भाषण आ' लेखनक आधार अछि तथा व्याकरणक प्राण थिक। प्राचीन आचार्यलोकनि इन्द्र, पाणिनि, यास्क आदि शब्दक महत्त्वपर बहुत जोर देलनि आ' विस्तारपूर्वक ओकर स्थितिपर विचार कएने छथि। ध्वनिक जाहि मेलसँ कोनो अर्थ बाहर होइत अछि, ओ शब्द कहबैत अछि। निष्कर्षतः, वर्ण वा अक्षरक एहन समूह जकर किछु अर्थ निकलैत होअए, ओकरा शब्द कहल जाइछ। जेना-कलम, पोथी, सरबत आदि।¹ आब प्रश्न उठैत अछि जे की एकटा वर्ण शब्दक श्रेणीमे आबि सकैछ? एहि प्रसंग, जखन कोनो वर्ण स्वतंत्र रहत आ' ओहिसँ कोनो सांकेतिक अर्थ नहि उत्पन्न होएत, तँ ओ मात्र 'अक्षर' वा 'वर्ण' कहाओत; मुदा, जखन कोनो वर्ण स्वतंत्र रूपेँ कोनो वाक्यमे प्रयुक्त होएत आ' कोनो

विशेष अर्थ प्रकट करत, तँ ओ शब्दक श्रेणीमे आबि जाइत अछि। जेना एक वर्णसँ निर्मित शब्द- न (नहि), व (आओर)। अनेक वर्णसँ निर्मित शब्द - कलम, आँखि, पोथी इत्यादि।²

शब्द अर्थक स्तरपर भाषाक लघुतम एकाइ थिक। एहि परिभाषासँ दू गोटा बात स्पष्ट होइछ। पहिल जे शब्दक एकटा स्पष्ट अर्थ होइछ जे अर्थक स्तरपर तुलनात्मक रूपेँ वाक्य, उपवाक्य, पद इत्यादिसँ लघु होइत अछि। एकरा ध्वनिक स्तरपर लघुतम एकाइ नहि कहल जा सकैछ, कारण एहिमे एक वा एकसँ बेसी ध्वनि सेहो भ सकैछ। शब्दक दोसर एकाइ स्वतंत्र होइत अछि अर्थात् एकरा लेल ने तँ प्रयोगक आधार आ' ने अर्थेक आधारपर ककरहुँ सहारा लेबए पडैछ। उदाहरणार्थ 'अ' उपसर्ग तथा 'ता' प्रत्यय (जेना- 'अ' नहि केर अर्थमे 'अहित' तथा 'ता' (सुन्दरता) अर्थक स्तरपर लघुतम एकाइ थिक, मुदा एकरा शब्द नहि मानल जा सकैछ। एकर सार्थकता ककरहुँ संगहि रहलापर भ सकैछ। एहि प्रकारेँ ई परतंत्र अछि। एकरा विरुद्ध 'पूर्ण' एक शब्द अछि कारण एहिमे उपर्युक्त दुनू बातक समावेश अछि। एहि अर्थमे ई लघुतम आ' स्वतंत्र दुनू एकाइ अछि। पंडित गोविन्द झा शब्दक प्रसंग लिखैत छथि:

*"सामान्य व्यवहारमे वाक्यक एहन घटक शब्द थिक जाहिमे अर्थ होअए आ' जकर उच्चारण बीचमे बिनु विराम नेनहि कएल जाए। मुदा, एहिसँ अभिप्रेत मात्र 'संज्ञा' आ' 'विशेषण' अछि जाहिमे विभक्ति आ' कारक चिह्न नहि लागल होअए।"*³

पाणिनि आ' यास्कक परम्परामे एकरा प्रातिपदिक (Nominal base) कहल जाइछ। एहि प्रकारेँ शब्दक दू स्वरूप अछि- मुक्त (विभक्तिरहित) आ' अन्वित (

विभक्तिसहित)।⁴ जेना- गाछक पात खसल। एतए गाछ मुक्त रूप थिक आ' अन्वित रूप। मुक्त रूप 'अविधान (नाम) कहबैत अछि आ' अन्वित रूप 'पद'। शब्दकोशसभमे शब्दक इएह रूप संकलित रहैछ। मुदा, क्रियापदक मुक्त रूप नहि, एकर मूल रूप धातु कहबैत अछि। तँ शब्दकोशमे धातुक प्रविष्ट क्रियापदकेँ संज्ञा बनाए कएल जाइछ। जेना- 'लिख' नहि लिखब भेटत।

शब्दक ध्वनि-घटक:

कोनो शब्दक पृथक् रूपेँ दू कोटिक उच्चारण योग्य घटक होइत अछि। स्वतंत्र एकल स्वर, जेना- अ, आ, इ, इत्यादि आ' व्यंजन स्वर जेना-क, का, कि इत्यादि। व्यंजनक उच्चारण बिना स्वरक सहायतासँ नहि होइछ। एहि घटकसभकेँ वर्ण कहल जाइछ। कतोक शब्दमे दू-दू, तीन-तीन वर्णक उच्चारण एकहि संग एक आघातमे होइछ; जेना- चहटगर, कटहर, मित्र इत्यादि। शब्दक जे स्वर समूह एकहि झटकामे उच्चरित होइछ, ओकरा अंग्रेजीमे 'Syllable' कहल जाइत अछि।⁵ एकर विभाजन निम्न प्रकारेँ द्रष्टव्य अछि:-

(क) कटहर: स्वन संख्या (8) - क् अ ट् अ ह् अ र् अ; वर्ण संख्या (4) - कटहर; स्वनभक्ति (2)- कट् हर

(ख) खंजन: स्वन संख्या (7)- ख् अ न् ज् अ न् अ; वर्ण (3)- खं ज न; स्वनभक्ति (2)- खन् जन

खंजनक स्वनभक्तिमे संयुक्त व्यंजनक पहिल वर्ण पूर्ववर्ती स्वरक संग उच्चरित होइछ, तँ 'खन्' एकटा स्वनभक्ति भेल आ' दोसर 'जन'। अक्षरक रैखिक प्रतीककेँ देखब तँ 'वक्ता' शब्दमे 'व-क्ता'क रूपेँ विभाजन होइछ, मुदा व्याकरण वा भाषाक विवेचनमे रैखिक प्रतीकक आधारपर कएल गेल विभाजन कोनो

काजक नहि होइछ। वर्ण आ' स्वनभक्ति अन्यत्र प्रयोजनीय अछि।⁶

शब्दक विकासक्रमिक वर्गीकरण :

शब्दक स्वनिक स्वरूप कालक्रमे बदलैत रहैत अछि। प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक शब्दमे स्वनिक परिवर्तन मध्यकालमे भेल आ' पुनः ओहिसँ आधुनिक मैथिलीमे। एहि प्रक्रियाक कारणेँ शब्दक अनेक प्रकार विकसित भेल। मैथिलीमे करीब 85 प्रतिशत शब्द प्राचीन भारतीय भाषामूलक थिक। मैथिलीक कोन-कोन शब्द प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक थिक आ' कोन नहि, ई पता लगाएब अत्यन्त दुरूह काज अछि। कतोक हजार वर्षक प्रवाहमे शब्द घिसाइत गेल आ' ओहिमे स्वन परिवर्तन ततेक होइत गेल जे ओकर मूलक अन्वेषण करब भाषावैज्ञानिकलोकनिक लेल अति दुरूह काज छनि। एहि दुरूहता दिसि संकेत करैत भारतक प्राचीनतम भाषाशास्त्री 'यास्क' शब्दकेँ स्वनविकासानुसार तीन भागमे बँटलनि अछि ⁷

(i) **प्रत्यक्षवृत्ति शब्द** : एहन शब्द जाहिमे स्वनविकार ततबा थोड भेल जे ओकरा देखितहि सहजतासँ ओकर मूलशब्द ज्ञात भ' जाइछ अर्थात् शब्दक व्युत्पत्ति प्रत्यक्षतः परिलक्षित भ' जाइछ। जेना-काष्ठ>काठ, आकाश>अकास इत्यादि।

(ii) **परोक्षवृत्ति शब्द** : जाहि शब्दक व्युत्पत्ति, स्वनपरिवर्तनक कारणेँ आइ बोझ बुझाइत अछि अथवा जकर मूल किछु आयासँ अवधारित भेल होअए, ओकरा परोक्षवृत्ति कहल जाइत अछि। जेना-वृषभ>बसहा, खाद्यधान्य>खैहन आदि।

(iii) **अतिपरोक्षवृत्ति शब्द** : जाहि शब्दक व्युत्पत्ति अत्यधिक स्वन परिवर्तनक कारणेँ अतिपरोक्ष वा अत्यधिक दुर्लक्ष्य भए गेल होअए। जेना- अधोवत्रिका>धोती, शुकतुण्डक>सुअउंडअ>सूँडा, आदि।

शब्दक ऐतिहासिक वर्गीकरण

ऐतिहासिक दृष्टिँ मैथिली शब्दकेँ चारि वर्गमे विभक्त कएल गेल अछि। प्राकृत व्याकरणसभमे उपर्युक्त अपरोक्षवृत्ति जेकाँ त्रिधा विभाजन भेटैत अछि- तत्सम, अर्द्धतत्सम आ' तद्भव। ई विभाजन एतेक महत्वपूर्ण आ' उपयोगी सिद्ध भेल जे समस्त विश्वक भाषाविज्ञान जगतमे पसरि गेल आ' तत्सम एवं तद्भव एही रूपमे भाषाविज्ञानमे अपन स्थान ग्रहण क' लेलक। ऐतिहासिक दृष्टिँ शब्दकेँ चारि भागमे बाँटल गेल अछि- तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज। मैथिली शब्दावली बुझबामे ई विभाजन आवश्यक अछि, तँ एहि प्रसंग विचार करब अपेक्षित।

(1) **तत्सम-** 'तत्+सम' सँ तत्सम शब्दक निर्माण भेल अछि, जाहिमे 'तत्'क अर्थ भेल - 'ओकर' आओर 'सम'क अर्थ भेल - 'समान' अर्थात् जाहि शब्दकेँ संस्कृतसँ बिना कोनो परिवर्तन कएनहि मैथिलीमे प्रयोग कएल जाइछ, ओएह तत्सम शब्द कहबैछ। एहिमे ध्वनि-परिवर्तन नहि भेल रहैत अछि। अग्नि, रात्रि, दुग्ध आदि। भारतमे आन देश जकाँ प्राचीन शब्द मुइल नहि अपितु वैदिक आ' संस्कृत कालक शब्द किछु शिक्षित वर्गमे जीवित आ' समृद्ध होइत रहल। धर्मभाषा आ' 'संस्कृतक प्रभावेँ अनेक शब्द मैथिलीमे अविकृत रूपेँ निरन्तर प्रयुक्त होइत रहल। ओना भारतहुँमे ई अपन तीन रूप- सजातीय, विजातीय आ' अर्द्धतत्सम रूपमे प्रयुक्त होइत रहल अछि।

सजातीय तत्सम : जाहि तत्समम शब्दक स्वन-संरचना मैथिलीक अनुकूल रहैत अछि, ओ सजातीय तत्समक श्रेणीमे अबैत अछि। जेना-जल, देह, मास, काल आदि।

विजातीय तत्सम : जखन कोनो संस्कृत शब्दक स्वन-संरचना मैथिलीक प्रतिकूल होइछ तँ ओ शब्द विजातीय तत्समक कोटिमे अबैत अछि। जेना-श्रेष्ठ, नेत्र, गोत्र, ग्रन्थ, मृत्यु, शास्त्र इत्यादि। प्राचीन आ' अंशतः मध्यकालीन मैथिलीमे विजातीय तत्सम शब्दक प्रयोग प्रायः वर्जित छल। ध्यातव्य जे सजातीय तत्समक प्रयोग सेहो नहिँ जेकाँ होइत छल।⁸ मैथिलीमे किछु अग्राह्य तत्सम शब्द अछि, जेना- नेत्र, स्त्री, स्वर्ण, वृक्ष, स्तन वस्त्र आदि। एकरा लेल ग्राह्य तत्सम शब्द क्रमशः नयन, नारी, कनक, तरु, कुच, बसन आदि प्रयुक्त होइछ। संस्कृतक सभटा शब्द मैथिलीमे ग्राह्य नहि मानल जाइछ। संस्कृतमे 'जल' शब्दक पर्याय थिक - अम्बु, अम्भस, अर्ण, आपस्, उदक, कमल, कीकल, नीर, जल, धनरस, क्षीर, सलिल, वारि, पानीय, पयस् इत्यादि। एहिमे सँ मैथिलीमे सामान्यतः मात्र चारि गोटा शब्द प्रयुक्त होइछ- जल, नीर, सलिल, वारि। आपस् (आप/अप) अन्यत्र अति व्यापक क्षेत्रमे प्राचीन कालहिसँ प्रचलित रहितहुँ मैथिलीमे अग्राह्य अछि।⁹

तत्सम शब्दक प्रयोगकें परिनिष्ठित मानल जाइछ। जेना गंगाक 'जल' आ' खत्ता वा डबराक 'पानि' सएह उपयुक्त हएत। कखनो काल तत्सम शब्दक अर्थ मैथिलीमे बदलि जाइत अछि। जेना- चेतन- वयस्क, आवेश-स्नेह, व्यवस्था- दहेज, परंच-परन्तु, न्यास- नेआर, उपन्यास- वैवाहिक, सम्बन्ध- प्रस्ताव, निर्दिश- असहाय, उपराग- उलहन, उपहत-छुतल, लघुशंका-मूत्रत्याग आगम- आभास, एकान्ती-गुप्तवार्ता आदि।

अर्द्धतत्सम : संस्कृत ने मात्र मैथिलीक अपितु समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक लेल उपजीव्य बनल रहल। तँ मैथिलीमे संस्कृतसँ नब-नब शब्द अबैत रहल। थोडे'क दिन धरि ई शब्दसभ सामान्य व्यवहारमे चलैत रहल, पश्चात् अविकल रूपसँ गृहीत होइत गेल। परिणामतः शिष्टजन तँ संस्कृते'क व्यवहार करैत रहलाह; मुदा, जनसामान्यक उच्चारणमे थोड-बहुत परिवर्तन होइत गेल। जेना- 'त्रयोदशी'सँ 'तिरोदसी'; 'जवाहर'सँ 'जमाहिर'; 'लक्ष्मी'सँ 'लछमी'; 'हनुमान'सँ 'हलुमान' इत्यादि। एहि प्रकारक शब्दसभकें अर्द्धतत्समक कोटिमे राखल गेल अछि

निष्कर्षतः तत्सम शब्द ओ थिक जखन विसदृश संस्कृत शब्द सर्वजन प्रचलित भ' जाइछ आ' अत्यन्त स्वनिक विकारक संग उच्चरित होइछ। तत्समसँ अर्द्धतत्समक अवस्थामे, शब्दमे निम्न रूपें विकार उत्पन्न होइछः (क) स्वर-भक्ति : यंत्र>जंतर, हास> हास। (ख) शेषह्रस्वताः पूर्णिमा> पुरनिमा; चामुण्डा>चमुण्डा। (ग) 'श' एवं 'ण' मे दन्त्यकरणः आवेश>आवेस, प्राण>प्रान। (घ) 'व'क ओष्ठ्यकरणः व्यर्थ>बेर्थ, नव>नब, विष्णु>विस्नु।¹⁰

(2) **तद्भव शब्द :** संस्कृतसँ विकृत भ' मैथिलीमे जे शब्द प्रयुक्त होइछ, ओ तद्भव शब्द थिक; जेना-'ग्राम'सँ गाम। एहिठाम ई 'ग्राम' तद्भव शब्द कहाओत। यथार्थमे कही तँ तद्भवे मैथिलीक अपन सम्पदा थिक। इएह सामान्य लोकक व्यवहारमे अछि। मात्र शिष्ट आ' समृद्धे लोक प्रतिष्ठा-प्रदर्शनार्थ तत्समक प्रयोग बेसी करैत छथि। इएह कारण अछि जे समाजमे द्विवाचिकता (Diglossia) आयल अछि। तत्सम-प्रधान उच्च स्तरक भाषा आ' तद्भव-प्रधान निम्न स्तरक भाषाक व्यवहार इएह थिक। उच्च स्तरक भाषाक वक्ता कखनहुँ काल तद्भवकें तत्सम बनाए भाषण वा लेखन करैत छथि।

द्रष्टव्य अछि निम्न शब्द - हस्त> हाथ, मुख> मुह, ग्राम>गाम, पुत्र> पूत, भ्राता>भाए, प्रतिपत्र>पडिब आदि। कखनहुँ काल तद्भवक तत्सम-पर्यायवाचीक प्रयोग सेहो करैत छथि ; जेना-जल, घट, जलपान, वृक्ष, मध्यम, आसन (उच्च स्तर); पानि, घैल, पनिपिआइ, गाछ, दुपहरि, बैसक (निम्न स्तर)। एहि शब्दसभकेँ उच्चसँ निम्न स्तरमे विकसित होएबामे कतोक हजार वर्षक यात्रा करए पडलैक अछि। प्राचीन वैयाकरण आ'अर्वाचीन भाषावैज्ञानिकलोकनि ओहि नियमक अन्वेषण कएलनि अछि जकरा द्वारा आइ प्रायः समस्त तद्भवक मूलान्वेषण करब संभव भ' सकल अछि। एकर विस्तृत अध्यनक लेल देखू - मैथिली भाषाविज्ञान, 2023, डा. विजयेन्द्र झा, प्रतिभा प्रकाशन, पृ.569-572

(3) **देशज शब्द** : जाहि शब्दक व्युत्पत्तिक ज्ञान नहि होअए, जे अन्य देश वा भाषासँ नहि आएल होअए, जे अपनहि देशमे उत्पन्न भेल होअए तथा जे तत्सम, तद्भव आ' विदेशज शब्दसँ फराक होअए, ओकरहि देशज शब्द कहल जाइत अछि। देशज शब्द वस्तुतः निश्चयात्मक नाम थिक, जखन कि एकर व्युत्पत्तिक विषयमे किछु कहल नहि जा सकैछ। तँ देशज शब्दकेँ डा. भोलानाथ तिवारी 'अज्ञात व्युत्पत्ति' 11 नाम धरओलनि अछि। ओना देसज शब्दहुँमे किछु दोसर भाषासँ आयल अछि। संस्कृतमूलक शब्द समस्त आर्यावर्तमे प्रसिद्ध मानल जाइछ। पछाति प्राकृत आ'अपभ्रंशहुँमे किछु शब्द एहन भेटल जे आर्यावर्तक कोनहुँ ने कोनो क्षेत्रमे प्रचलित छल। प्राकृत व्याकरणमे एहि तरहक शब्दसभकेँ देशज वा देशी (Native) कहल गेल। एहि प्रकारक शब्दसभ आर्येतर अर्थात् मूलनिवासीक जनगणक विभिन्न भाषासँ आयल छल होएत। एहि कोटिक किछु शब्दक उदाहरण द्रष्टव्य अछि- कुरी, खुट्टा,

गोरु, चुहार, चाई, टांग, पन, राड, अपैत, आँच, इछाइन, ईस, उपाइत, एकछाहा, ऐहब, खटरास, गजबज, घचपच, छिछिआएब, जपाल, झमटगर इत्यादि।¹²

विशुद्ध मैथिलीक अपशब्द

मिथिलाक शिक्षित, अशिक्षित, अल्पशिक्षित लोक अज्ञान, क्रोध, आवेग आदिक कारणेँ अपशब्दक प्रयोग करैत छथि। एहि प्रकारक शब्दसभक भाषाविज्ञानक दृष्टिँ अपन पृथक् महत्व अछि। जेना-कुतबा, चोटबा, डनियाँ, डकिनियाँ, रक्षसबा, बोका, मुहझाँसा, छुछुनरिआ, छुछुन्नरि, बोकबा, छुतहरबा, देहजरुआ, अभगला, सरधुआ कोंढिआ, अभगला, खच्चर (-रि), छुच्छी, धोंछी आदि। ई शब्दसभ मुख्य रूपेँ मैथिली भाषेक थिक। एहि प्रकारक भावोत्पन्न करए वला शब्दसभ आनो भाषामे पाओल जाइछ। तेना- अपैत (मैथिली)- सकडी (बंगला) आदि।¹³

4. **विदेशज शब्द**: जे शब्द दोसर देश वा प्रान्त तथा दोसर भाषासँ आबि किछु परिवर्तन कए अथवा अपन मूले रूपमे प्रगतिशील भाषाक अंग बनि जाइत अछि, ओकरा विदेशज शब्द कहल जाइत अछि। आधुनिक मैथिलीमे सबसँ बेसी विदेशी शब्द 'अंग्रेजी' आ' फारसीसँ आयल अछि। मिथिला 13म शताब्दीए सँ मुसलमानक शासनाधीन रहल। ओ सब एहिठामक लोककेँ मुसलमान बनबैत गेल। फलतः तुर्की, अरबी आ' फारसीक अनेक शब्द मैथिलीमे सहिआइत गेल। 16म सदीसँ पोर्तगाल, डच, फ्रेंच आ' अंग्रेज भारतमे आबि अपन प्रभुत्व जमबय लागल आ' अन्ततः अंग्रेज अखिल भारतक शासक भ' गेल। तँ मैथिलीमे यूरोपीय भाषाक अनेक शब्द सेहो दृष्टिगत होइत अछि।

विदेशी शब्दसभ विभिन्न प्रयोगक क्षेत्रमे अपन पर पसारलक, जेना- प्रशासन, राजस्व, न्याय, रक्षा, राजसी ठाठ, सामंती शिष्टाचार धर्म आदि। दैनन्दिन जीवन आ' लोकाचारक क्षेत्रमे विदेशी शब्द मिथिलामे मात्र मुसलमानलोकनिक बीच प्रवेश कएलक। फारसक अधिकांश शब्द मैथिली शब्दकें विस्थापित क'अपन स्थान छेकलक, मुदा यूरोपीय शब्द अधिकांशतः रिक्त स्थानक पूर्ति कएलक। जेना- नब-नब आविष्कार, ज्ञान-परिज्ञान, प्राकृतिक आपदा आचार-विचार आदि। उदाहरणस्वरूप, 2020 ई.क कोविड-19 महामारी समस्त विश्वक संग भारतो कें प्रभावित कएलक। तें भारतीय आ' मैथिली भाषा-साहित्यमे कोरोना, लाकडाउन, सेनेटराइजेशन, कोरेनटीन मास्क आदि शब्दसँ जनसामान्य परिचित भेल। मैथिली भाषी एहिसँ पूर्व एहि शब्दसभसँ पूर्णतः अपरिचित छलाह। एहिना नबीन शब्दसभ मैथिली भाषामे सन्निहाएल। जेना- अफसोस (फा.)- अपसोच (मै.), अक्ल (अ.)-अकिल (मै.), चादरे(फा.)- चादरि (मै.), तोशक (तुर्की)- तोसक (मै.), लाश (तुर्की)- लहास (मै.), लेन्टर्न (अं.)- लालटेन/लालटेम (मै.), थियेटर (अं)- ठेटर (मै.) आदि अछि। एहिना अंग्रेजी आ' मैथिली शब्द मिलि सेहो टिकटघर, जेलयात्रा आदि शब्दसभ मैथिलीमे प्रचलित होमय लागल। पुर्तगाली शब्दसभ सेहो 16म शताब्दीए सँ मैथिलीमे सन्निह लागल, जेना- बोटल (पु.)- बोटल (मै.), डिसेम्बर (पु.)- दिसम्बर (मै.) इत्यादि।¹⁴

फारसी-अरबी-तुर्की आ' मैथिली

डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्याक मोताबिक बंगलामे करीब 2500 फारसी-अरबी-तुर्की शब्दसभक प्रयोग भेल होएत। मैथिलीमे एकर संख्या बेसीसँ बेसी 800-1000 होएत।¹⁵ ई शब्दसभ विद्यापति कालहिसँ अभडैत

अछि। ओहि समय प्रशासन संबंधी, राजस्व संबंधी, विलासिता संबंधी आदि विषयक शब्दसभ मैथिलीमे सेहो आएल अछि। विद्यापति स्वयं अपन संस्कृतक पोथी 'लिखनावली'मे एहि विदेशी शब्दसभक प्रयोग कएने छथि, जेना-ओजेह दाम, हाल देय, पोत, पैकार आदि। किछु शब्दक संस्कृतीकरण सेहो देखल जाइछ, जेना-सुरत्राण (सुल्तान), पोत्रक (पोत), चातुर्धरिक (चौधरी) इत्यादि।

मैथिलीकें राजभाषा बनबाक सौभाग्य कहिओ नहि भेटि सकल, मुदा खण्डबला कुलक शासनकालक किछु अर्द्धसरकारी पत्र आ' छोट-छोट सनद सभमे जे मैथिली शब्दसभक प्रयोग भेटैत अछि, ताहिमे 80% करीब फारसी शब्द अछि, तहिना जेना उर्दूमे व्यवहार भेल अछि। 17म सदीक करीब फारसी शब्द मैथिलीमे ग्राह्य बुझल जाए लागल। रत्नपाणि (1833-1853) अपन उषाहरण नाटकमे एहन नओ गोट शब्दक प्रयोग कएलनि अछि- जंग, फौज, तैयारी, जोर, शोर, तरह, रंज, दिमान, हुकुम। चन्दा झाक मिथिलाभाषा रामायण आ' भजनसभमे विदेशी शब्दक प्रयोग थोड-बहुत सेहो भेटैत अछि, जेना-

“जे फकीर से करथि फराक। बसथि बाजारमे पूजा काज। मन तनमे नबाब बहुत अनीति करै के जबाब। अङ्गु-बङ्गु घोर जोर हुनक हिसाब।”

चन्दाझाक एकटा भजन हिन्दीमे अछि, जे प्रमाणित करैछ जे फारसी शब्द राजदरबारमे कतेक पसरल छल-

“रटति श्रुति सुखमय श्री दरबार /नाजिर अनल सकल ऋतुकारक पवन चतुर प्रतिहास / श्रीपतिजहाँ सिरिस्तेदार हैं यम से यहाँ जमादार /तहसिलदार तरल

*तारापति मघवा मुनिस विचार / मारतण्ड है महा मुसद्दी
वरुण वकील उदार / दुहिन दिमान दयामय देखल दिव्य
दृष्टि संसार महादेवजी मुख्य मोसाहेब महामहिम आगार
/ महारानी श्रीदेवी पदनख चन्द्र सकल दुख टार।¹⁶*

बुझाइत अछि जे मैथिली, फारसी शब्द ग्रहण करबामे ओतेक उदार नहि अछि, जतेक भोजपुरी आ' पश्चिमी भाषासब। जेना- भोजपुरीमे मेहमान, सुबह, शाम, शरीफ, इनसान'क लेल मैथिलीमे क्रमशः पाहुन, परात, साँझ, भलमानुस, मनुक्ख शब्द प्रयुक्त होइछ। मैथिलीमे किछु एहनो शब्द फारसीक भेटैत अछि जे उर्दूअहूँमे प्रचलित अछि, जेना- चाहे, शौकीन, चबूतरा, मनौती, पनौती, लेकिन इत्यादि।

व्युत्पत्ति वा रचनाक आधारपर शब्द

रचनाक आधारपर मैथिली शब्दकें वैयाकरण आ' भाषावैज्ञानिकलोकनि तीन भागमे विभक्त करैत छथि- रूढ, यौगिक आ' योगरूढि।

रूढ शब्द: रूढ शब्द ओ थिक जे कोनो अन्य शब्दक योगसँ नहि बनैत अछि आ' कोनो विशेष अर्थ प्रकटकरैत होअए। एहिमे कोनो रचनांग अर्थात् अर्थ वला अंश नहि रहैछ। रूढि शब्दमे बेसीसँ बेसी तीन अक्षर, चारि मात्रा आ' दू स्वनभक्ति रहैत अछि, जेना- हाथ, मुह, मचान आदि। 'हाथ'मे 'हा' आओर 'थ' दूटा खण्ड अछि, जकर पृथक्-पृथक् कोनो अर्थ नहि होइछ। तँ 'हाथ' शब्द रूढ कहाओत। रूढ शब्द अव्युत्पन्न सेहो कहबैत अछि, किएक तँ एकर व्युत्पन्ना व्याकरण द्वारा नहि होइछ।¹⁷

यौगिक शब्द : जखन कोनो दू शब्द, दूटा सार्थक लघुतम भाषिक एकाइक योगसँ शब्दक निर्माण होइछ

आ'जकर रचनामूलक अर्थ बोधगम्य होअए, तँ यौगिक शब्द बनैत अछि, जेना - तमघैल, एहिमे 'तम' आ' 'घैल' दुनू खण्डक सार्थक अर्थ बनैत अछि। संख्याक दृष्टिँ अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषासँ मैथिलीमे यौगिक शब्दक बहुलता अछि। डा. सुभद्र झा मैथिलीमे प्रचलित 264 प्रत्यय आ' 26 गोट उपसर्ग निर्धारित कएलनि अछि। एहिना महावैयाकरण पं. दीनबंधु झा 1135 धातुक चरचा कएने छथि। एहि विस्तृत रचनांगसभक क्रमविपर्यास (Permutation and Combination) द्वारा असंख्य शब्द बनाओल जा सकैछ। यौगिक शब्द बनएबाक दूटा आधार अछि- नाम (मुक्त शब्द, प्रातिपदिक) आओर धातु। कोनो व्यक्ति, वस्तु, गुण, संज्ञा, भाव - 'नाम' कहबैछ। 'नाम'क दूटा भेद अछि-संज्ञा आ'विशेषण। नाम आ' धातु दुनू दू-दू प्रकारक होइछ-रूढ आ' यौगिक। रूढक प्रसंग पहिनहि चर्च भ'चुकल अछि। यौगिक शब्द दू रूपेँ बनैत अछि- नाममे प्रत्यय लगाए "नाम यौगिक" आ' धातुमे प्रत्यय लगाए "धातु यौगिक" बनैत अछि। एकरा दुनूक मोताबिक प्रत्यय दू प्रकारक होइत अछि। नाममे लगनिहार प्रत्यय 'तद्धित प्रत्यय' आ' एहिसँ बनल नाम तद्धितान्त नाम कहबैछ। एहिना धातुमे लगनिहार प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय आ' ताहिसँ बनल नाम कृदन्त कहबैत अछि। यौगिक धातु सेहो दू प्रकारक होइछ- जखन धातु संग प्रत्यय जुडैछ तँ ओ 'प्रेरणार्थक' आ' नाम संग प्रत्यय जुडल तँ ओ "नामधातु" कहबैछ।

योगरूढि शब्द: ओ शब्द जे यौगिक होइत अछि मुदा विशेष अर्थ हेतु रूढ भ' जाइछ; योगरूढि कहबैछ। जेना- पनबट्टी, मटकूड, जलज आदि। पनबट्टी कहलासँ पानेटा रखबाक वस्तुक बोध होइछ। जलज कहलासँ जलमे उत्पन्न होमयवला समस्त वस्तु भेल, जेना- सेमार, डोका,

घोंघा आदि, मुदा एकर विशिष्ट अर्थबोध एक मात्र 'कमल'सँ अछि।¹⁸

प्रयोगक आधारपर मैथिली शब्द :

प्रयोगक आधारपर मैथिली शब्दसभकेँ अनेक रूपें विभाजित कएल जाए सकैछ, जाहिमे पारिभाषिक, अर्द्धपारिभाषिक, सामान्य, आधारभूत, माध्यमिक, उच्च तथा सक्रिय आ' निष्क्रिय आदि अनेक नाम गिनाओल जा सकैछ। एतए शब्द निर्धारित एहि आलेखमे एकरा सभक विवरण प्रस्तुत करब संभव नहि। एकरासभक विस्तृत अध्ययन हेतु देखू हमर मैथिली भाषाविज्ञान, पृष्ठ संख्या- 556-57; एकर अतिरिक्त मैथिली भाषा-साहित्यमे मोहाबरा, लोकोक्ति, बुझौअलि, लोकसाहित्यक विविध उपखण्ड जेना- डाकवचन, लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, सिद्धसाहित्य, प्राकृतपैंगलम् आदिसभमे अनेक मैथिलीक विशिष्ट शब्दसभ अभडैत अछि, जकरासभक विवेचन करब सेहो अपेक्षित, मुदा से एहि लघुकाय आलेखमे संभव नहि।

आब जँ शब्द समूहक प्रसंग विचार करब तँ ई स्पष्ट जे कोनो भाषामे प्रयुक्त होमयवला समस्त समूहकेँ ओहि भाषाक शब्द-समूह कहल जाइत अछि। एहि शब्द समूहक यथार्थ अनुमान लगायब संभव नहि। अंग्रेजी भाषाक शब्द-समूह अन्य समस्त भाषासँ समृद्ध अछि। अंग्रेजीमे करीब-करीब छओ लाख (6,00,000) शब्द होएत।¹⁹ मोनियर विलियम्सक मोताबिक संस्कृत भाषामे सवा लाख (1,25,000)क आस-पास शब्द संख्या अछि।²⁰ शब्द समूहक दृष्टिँ हिन्दीक सभसँ पैघ शब्दकोश “ बृहत् हिन्दी कोश”मे डेढ लाख (1,50,000) शब्द संकलित अछि। जहाँ धरि मैथिलीक प्रश्न अछि, तँ

एकर दू गोटा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कोश- “मैथिली शब्द कोश” जे मैथिली अकादमी पटनासँ प्रकाशित अछि तथा “कल्याणी कोश” जे महाराजधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगासँ प्रकाशित अछि, एहिमे पैंतीस हजारक आस-पास शब्द संकलित अछि। मुदा ई पूर्ण नहि अछि। मैथिली साहित्य- रचनाआ' एहि भाषाक विविध बोलीसभमे प्रयुक्त शब्दसभकेँ जँ संकलित कएल जाए तँ एकर कोशक आकार बृहत् भ' जाएत आ' करीब 60-70 हजार ई शब्दसभ मैथिलीओ मे अवश्य संकलित भ' सकैछ।

निष्कर्ष:

मैथिली भाषा अत्यन्त प्राचीन अछि। एकर संबंध रामायण कालहिसँ अछि, मुदा प्रमाणिक रूपें वेदमे मैथिली शब्दसभ ठाम-ठूम अभडैत अछि। पश्चात् संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषामे सेहो मैथिली शब्दक साक्ष्य उपलब्ध अछि। अवहट्ट तँ प्राकृत आ' प्राचीन मैथिलीक मध्य सेतुक काज करैत अछि। प्रस्तुत आलेखमे ओहि समस्त मैथिली शब्दसभकेँ सूत्र रूपमे समेटबाक प्रयास कएल अछि जे विशुद्ध मैथिलीक थिक वा आन भाषासँ आयातित भ' मैथिलीक स्वनिमक अनुकूल भ' मैथिलीमे पचि गेल अछि। एकर अतिरिक्त तत्सम, तद्भव, विदेशज शब्द जे मैथिलीमे प्रचलित भ' चुकल अछि, ओकरासभकेँ एहिठाम समेटबाक प्रयास कएल, मुदा मैथिली भाषाक क्षेत्रविस्तार आ' शब्द-सामर्थ्यकेँ देखैत निर्धारित शब्द-संख्यक एहि आलेखमे मैथिलीक समस्त प्रकारक शब्दसभक विवेचन करब कथमपि संभव नहि। तँ मात्र प्रचलित शब्द आ' शब्द निर्माणक सामान्य प्रक्रियाक विश्लेषण करब एहिठाम हमर आभिप्रेत रहल अछि।

संदर्भ सूची

- [1] झा डा. विजयेन्द्र; 2021, मैथिली व्याकरण ओ रचना, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 29
- [2] ओएह
- [3] झा पं. गोविन्द, 2011, भाषाशास्त्र-प्रवेशीका, पटना : दीनबंधु प्रकाशन
- [4] झा डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 562
- [5] द्रष्टव्य: मैथिली भाषाविज्ञान-ध्वनिविज्ञान प्रकरण, 2022, प्रतिभा प्रकाशन, मुज., लेखक-डा. विजयेन्द्र झा
- [6] झा डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 563
- [7] ओएह
- [8] ओएह, पृ. 567
- [9] झा पं. गोविन्द; 2007, मैथिली परिशीलन, पटना : मैथिली अकादमी
- [10] झा डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 567
- [11] तिवारी डा. भोलानाथ; 1951, भाषाविज्ञान, इलाहाबाद : किलाब महल प्राइवेट लिमिटेड
- [12] झा डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 572-81
- [13] ओएह, पृ. 580
- [14] ओएह,
- [15] ओएह,
- [16] ओएह, 585-86
- [17] झा डा. विजयेन्द्र; 2021/ 2025, मैथिली व्याकरण ओ रचना, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली : मांडा पब्लिशर्स, पृ. 63
- [18] झा डा. विजयेन्द्र; 2022, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 565-66
- [19] ओएह
- [20] ओएह